

Padma Shri



DR. CHANDRAKANT MEHTA

Dr. Chandrakant Mehta is a well known educationist, eminent and popular Author of Gujarati & Hindi, poet, essayist, story writer, Journalist, litterateur, social thinker, social activist and an able administrator who looked after the affairs of the premier University of Gujarat as Pro-Vice-Chancellor and Vice Chancellor (Officiating). He has in his heart the compassion for the upliftment of the downtrodden and that too by education. He is nurturer of high Indian values, a multifaceted personality contributing in different fields of society, a perfect guide for the youth and a mind with a treasure house of Indian culture.

2. Born on 6th August, 1939, Dr. Mehta began his career as a Primary Teacher and scaled laterally to the position of Pro-Vice Chancellor and Vice Chancellor (Officiating) of Gujarat University. He has 51 years experience of teaching Hindi and 38 years experience of teaching Journalism up to Post Graduate Level. Under his guidance 6 students got Ph.D. in Hindi and 9 students got Ph.D. in Journalism. He has delivered more than 100 lessons to teach Hindi to people of Gujarat through All India Radio. He is respected as 'Media Guru' and has prepared more than 1500 Journalists. 6 books of Journalism written by him are accepted as reference books by various Universities.

3. Dr. Mehta is the pioneer of Vocational Education at College level in Gujarat by introducing various innovative courses in 1978 and has helped thousands of youth to get job. Over the years he has established many Vocational Institutes. He is dedicated to eradication of illiteracy since last 38 years and has managed 9350 Adult Education classes and 2,16,925 slum dwellers were made literate. His mission is to help youth to find right goals and develop their true potential.

4. Dr. Mehta has written total 173 books - 139 books in Gujarati, 30 Books in Hindi, 2 Books in English and 2 books in Prakrit. He is Member of Gujarati Sahitya Academy, Trustee - Mahakavi Nanlal Smarak Trust, Trustee - Shree Jaybhikkhu Sahitya Trust, Former Member of Executive Committee - Gujarati Sahitya Parishad. He is President of Hindi Sahitya Parishad, Vice President of Bruhad Gujarat Sanskrit Parishad, Chief Editor of Nutan Bhasha Setu (Hindi Quarterly). He is writing three columns every week in prestigious Gujarati daily Gujarat Samachar for past 45 years and has written more than 5000 popular articles.

5. Dr. Mehta has received many awards and honours for his contribution in various fields. For his contribution in Gujarati Literature, he has been conferred Dhumketu Award, Sanskruti Puraskar, Sanskar Award, Children Literature Award, Gujarat Sahitya Academy award & Bal Sahitya Academy award and Distinguished Scholar Award. For his contribution in Hindi Literature, he received Gaurav Award by the Government of Gujarat for his notable contribution in literature, Raj Bhasha Samman and Hindi Sahitya Academy Award. He has also received Life Time Achievement Awards, Nagar Ratna Award, Brahmin Scholar Awards. At National level, he received National Award (2001-02) for his book 'Saath Saath Chal Rahi Kiran', Sauhard Award, Bharti Bhooshan Award, Kadmbari Award, Sahitya Sadan Award, and Vidya Vachaspati Samman. He received Certificate of Appreciation by Illinois University, Chicago for his scholarly lecture on Relevance of Mahatma Gandhi and Senator, Commonwealth of Pennsylvania, USA and Brahma Ratna award by USA Brahmin Samaj.



डॉ. चंद्रकान्त मेहता

डॉ. चंद्रकान्त मेहता एक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, गुजराती और हिंदी के प्रख्यात और लोकप्रिय लेखक, कवि, निबंधकार, कथाकार, पत्रकार, साहित्यकार, सामाजिक विचारक, सामाजिक कार्यकर्ता और एक सुयोग्य प्रशासक हैं जो प्रो-वाइस चांसलर और वाइस चांसलर (कार्यवाहक) के रूप में, गुजरात के प्रमुख विश्वविद्यालय के कार्यों की देखरेख करते थे। उनके मन में शिक्षा के द्वारा दलितों के उत्थान के प्रति भावना रहती है। वह उच्च भारतीय मूल्यों के पोषक, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाली बहुमुखी शख्सीयत, युवाओं के लिए एक श्रेष्ठ मार्गदर्शक और भारतीय संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान हैं।

2. 6 अगस्त, 1939 को जन्मे डॉ. मेहता ने एक प्राथमिक शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया और बाद में गुजरात विश्वविद्यालय के प्रो-वाइस चांसलर और वाइस चांसलर (कार्यवाहक) के पद पर पहुंचे। उन्हें स्नातकोत्तर स्तर पर, हिंदी में 51 वर्ष और पत्रकारिता में 38 वर्ष का अध्यापन का अनुभव है। उनके मार्गदर्शन में 6 छात्रों ने हिंदी में पीएच.डी. और 9 छात्रों ने पत्रकारिता में पीएच.डी. की है। उन्होंने आकाशवाणी के माध्यम से गुजरात के लोगों को हिंदी सिखाने के लिए 100 से अधिक पाठ प्रस्तुत किए हैं। उनका सम्मान 'मीडिया गुरु' के रूप में किया जाता है और उन्होंने 1500 से अधिक पत्रकारों को तैयार किया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा पत्रकारिता पर उनकी लिखी गई 6 पुस्तक संदर्भ पुस्तक के रूप में शामिल की गई हैं।

3. डॉ. मेहता 1978 में गुजरात में कॉलेज स्तर पर विभिन्न नवीन पाठ्यक्रमों के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत करने में आगे रहे और उन्होंने नौकरी प्राप्त करने में हजारों युवाओं की मदद की है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान, उन्होंने कई व्यावसायिक संस्थानों की स्थापना की है। वह पिछले 38 वर्ष से निरक्षरता उन्मूलन के लिए समर्पित हैं और उन्होंने 9350 प्रौढ़ शिक्षा कक्षाओं का प्रबंधन कार्य किया है और 2,16,925 स्लमवासियों को साक्षर बनाया है। उनका ध्येय सही लक्ष्य खोजने और वास्तविक क्षमता विकसित करने में युवाओं की मदद करना है।

4. डॉ. मेहता ने गुजराती में 139, हिंदी में 30, अंग्रेजी में 2 और प्राकृत में 2 पुस्तक यानी कुल 173 पुस्तक लिखी हैं। वह गुजराती साहित्य अकादमी के सदस्य, महाकवि नानालाल स्मारक ट्रस्ट और श्री जयभिक्षु साहित्य ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा गुजराती साहित्य परिषद की कार्यकारी समिति के पूर्व सदस्य हैं। वे हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष, बृहद गुजरात संस्कृत परिषद के उपाध्यक्ष, नूतन भाषा सेतु (हिंदी त्रैमासिक) के मुख्य संपादक हैं। वे विगत 45 वर्ष से प्रतिष्ठित गुजराती दैनिक गुजरात समाचार में हर सप्ताह तीन कॉलम लिखते आ रहे हैं और उन्होंने 5000 से अधिक लोकप्रिय लेख लिखे हैं।

5. डॉ. मेहता को विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। गुजराती साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें धूमकेतु पुरस्कार, संस्कृति पुरस्कार, संस्कार पुरस्कार, बाल साहित्य पुरस्कार, गुजरात साहित्य अकादमी पुरस्कार और बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार और विशिष्ट विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हिंदी साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए, उन्हें गुजरात सरकार द्वारा गौरव पुरस्कार, राजभाषा सम्मान और हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। उन्हें लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड्स, नगर रत्न अवार्ड, ब्राह्मण स्कॉलर अवार्ड्स भी प्रदान किए जा चुके हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, उन्हें अपनी पुस्तक 'साथ साथ चल रही किरण', सौहार्द पुरस्कार, भारती भूषण पुरस्कार, कादंबरी पुरस्कार, साहित्य सदन पुरस्कार और विद्या वाचस्पति सम्मान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (2001-02) मिला। उन्हें महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पर अपने विद्वत्पूर्ण व्याख्यान के लिए इलिनोइस विश्वविद्यालय, शिकागो द्वारा प्रशंसा पत्र तथा सीनेटर, कॉमनवेल्थ ऑफ पेनसिल्वेनिया, यूएसए तथा यूएसए ब्राह्मण समाज द्वारा ब्रह्म रत्न पुरस्कार प्रदान किया गया।